अब मिजाज-ए-प्रदूषण का होगा 'इलाज'

संजीव गुप्ता ● नई दिल्ली

विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में शामिल दिल्ली के निवासियों की सेहत बेहतर बनाए रखने के लिए एक अनूठी योजना तैयार की गई है। इस योजना के तहत पहले दिल्लीवासियों की बीमारी का वर्गीकरण कर एक डेटा बैंक बनाया जाएगा। इसके बाद जिस प्रदूषण से बीमारियां बढ़ रही हैं, उसी पर रोक की दिशा में कार्ययोजना बनाई जाएगी और सख्ती से क्रियान्वित की जाएगी।

स्वस्थ समाज

इसके लिए केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) और द एनर्जी एंड रिसोर्स इंस्टीट्यूट (टेरी) एक ऐसा डॉक्टर एप तैयार कर रहे हैं, जिस पर दिल्लीवासियों की बीमारियों का आंकड़ा एकत्र किया जाएगा। पहले इस एप से केंद्र सरकार के अस्पतालों के डॉक्टरों को जोड़ा जाएगा, इसके बाद दिल्ली सरकार के अस्पतालों में कार्यरत डॉक्टरों को और बाद में निजी डॉक्टरों को। इस एप पर डॉक्टरों को केवल यह जानकारी देनी होगी कि मरीज किन-किन बीमारियों से ग्रसित हैं। कितने फीसद लोगों को एलर्जी है तो कितने फीसद को त्वचा रोग है, कितने फीसद श्वांस रोगों की चपेट में आ रहे हैं तो कितने फीसद मरीजों के फेफड़े कमजोर हो रहे हैं।

इन बीमारियों का वर्गीकरण कर एक डेटा बैंक बनाया जाएगा। इसके बाद यह अध्ययन किया जाएगा कि किस तरह के प्रदूषण से किस तरह की बीमारियों में इजाफा हो रहा है। इस अध्ययन के आधार पर ही उस प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए पुख्ता कार्ययोजना तैयार की जाएगी।

योजना

- पर्यावरण मंत्रालय, एम्स और टेरी मिलकर बना रहे डॉक्टर एप
- एप से एकत्र किया जाएगा मरीजों की बीमारियों का आंकड़ा
- इस आंकड़े के अनुरूप होगा शोध, बनाई जाएगी कार्ययोजना

वैसे तो प्रदूषण कोई भी हो, स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है। उसे नियंत्रित भी किया जाना चाहिए, लेकिन दिल्ली में जिस तरह का मिश्रित प्रदूषण फैल रहा है, उस पर काबू कर पाना इतना सहज भी नहीं है। इसलिए अब इस तथ्य को देखते हुए ही आगे बढ़ा जाएगा कि किस तरह का प्रदूषण ज्यादा खतरनाक है। इस दिशा में डॉक्टर एप का ट्रायल वर्जन दो माह में आ जाएगा। इसके बाद चार से छह माह में इसका संशोधित अपडेट वर्जन शुरू कर दिया जाएगा

डॉ. अजय माथुर, महानिदेशक, टेरी

प्रदूषण से होनी वाली बीमारियां

वातावरण में पीएम 10 की मात्रा अधिक होने से एलर्जी, सांसों की बीमारियां, अस्थमा व फेफड़े की अन्य बीमारियां होने का खतरा रहता है। पीएम 2.5 बहुत सूक्ष्म कण होता है। यह सांस के जरिये शरीर में प्रवेश करने के बाद खून में पहुंच जाता है। इस वजह से ब्लड प्रेशर, हार्ट अटैक व लकवा जैसी घातक बीमारियां होना का खतरा रहता है। इसके अलावा डीजल से चलने वाले वाहनों के धुएं में कैंसर कारक तत्व होते हैं। इसलिए प्रदूषण से कैंसर होने का खतरा रहता है।